पर्वों का भाव

ब्र.कु. अनुज भाई,दिल्ली

पर्व या त्योहार के पीछे का कोई न कोई इतिहास ज़रूर होता है। और कहते हैं इतिहास दोहराता है। जितने भी भारत के विशेष पर्व हैं उसमें भी एक पर्व महाशिवरात्रि का आता है। उस पर्व की गरिमा किसी से छुपी नहीं है। लेकिन उसकी महत्ता उन पर्वों से थोड़ी-सी कम हो जाती है। जिसको हम विशेष रूप से बहुत ज़्यादा याद रखते हैं जैसे दशहरा, दीपावली, होली, या और जो पर्व हैं उनके बारे में तो हम बहुत अच्छी तरह से जानकारी रखते भी हैं और देते भी हैं लोगों को। लेकिन महाशिवरात्रि पर्व ऐसा पर्व है जिस पर न कोई ऐसा स्पेशल, न कोई छुट्टी होती है और न ही कोई इस ओकेज़न(अवसर) को ज़्यादा महत्व देते हैं। देते हैं लेकिन और पर्वों के मुकाबले बहुत कम। कारण उसका क्या है क्योंकि हम और पर्वों को साकार रूप से, आराम से एक-एक चीज़ को देखते हुए उनके बारे में कथाओं में, पुराणों में, और-और चीज़ों में पढ़कर या किसी से सुनकर बहुत सारी बातें जान गये। जोकि साकार रूप में इस दुनिया में दिखाया जाता है कि रामचन्द्र जी ने ऐसा किया, कृष्ण ने ऐसा किया, तो उस आधार से हम उन त्योहारों के साथ न्याय करते हैं, लेकिन महाशिवरात्रि का पर्व एक निराकार परमपिता परमात्मा के अवतरण का पर्व है। क्योंकि वो ज्योतिबिन्दु स्वरूप है, निराकार है, देह रहित है तो उस बात को समझने के लिए हमें थोड़ा समय लग रहा है। इसलिए इस पर्व को हम थोड़ा-सा आसान तरीके से ले लेते हैं, सहज तरीके से ले लेते हैं लेकिन हम फोकस नहीं कर पाते। सारे त्योहारों और पर्वों का सार महाशिवरात्रि पर्व से ही शुरू होता है। क्योंकि निराकार परमात्मा शिव का यादगार इस दुनिया में, इस भारत वर्ष में, चाहे दुनिया में ज्योतिबिन्दु परमात्मा को दिखाने के लिए शिवलिंग का निर्माण किया गया। और अन्य स्थानों पर कुछ ऐसा चिन्ह दर्शा दिया गया। जैसे अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया या बेबिलोन हर जगह कुछ न कुछ परमात्मा का सिम्बल(प्रतीक) बनाया गया। लेकिन वो शरीर वाला नहीं है, शरीर के बिना है, देह रहित है। तो परमात्मा को इन पाँच तत्वों से परे वाली जो स्थिति है उसके आधार से जाना है। इस समय उसको इतना महत्व हम क्यों नहीं दे पा रहे हैं,क्योंकि हमको उस निराकार को समझने के लिए पाँच तत्वों की देह से अपने आपको परे ले जाना होगा। कहते हैं जो जैसा होता है दूसरे को वैसा देखता है। वैसे ही परमात्मा ज्योतिबिन्दु स्वरूप हैं तो वो हम सबको भी वैसा ही देखकर प्यार करते हैं।

जब उसके बारे में कम बातें हुई हैं, कम बातें लोग जानते हैं तो लोग जैसे भी मूर्ति देखी, जैसे भी मूर्तिकार को मूर्ति बनाते हुए देखा, वैसा मान लिया कि भगवान का स्वरूप ऐसा ही है। अब हनुमान जैसा भगवान इस दुनिया में अगर है तो हनुमान जैसा बच्चा पैदा हो जाये तो वो तो स्वीकार नहीं होगा, लेकिन मूर्ति के सामने हम जाके मान के आ जाते हैं कि भगवान ऐसा है। तो पूरी तरह से तो नहीं स्वीकारा ना! नहीं तो हमारे घर में ऐसा बच्चा पैदा हो तो हम उसको एक्सेप्ट कर लें, उसको स्वीकार कर लें,लेकिन नहीं कर सकते। कारण,क्योंकि हम काल्पनिक दुनिया में जी रहे हैं वास्तविकता ये है कि परमात्मा निराकार ज्योतिबिन्दु स्वरूप हैं और जितनी भी विश्व में आत्मायें हैं वो सारी या तो महान आत्मा हैं, या पुण्य आत्मा हैं, या देव आत्मा हैं, या फिर मनुष्य आत्मा है लेकिन कोई भी परमात्मा नहीं है। लेकिन इन बातों को कौन समझायेगा, किसको समझायेगा। उन्हें तो जो भी दिखाई दे रहा है उसे मानते हैं। लेकिन वो भी अंधविश्वास के आधार से। उस पर उनको छोटा-सा बिलीफ(विश्वास) है, बाकी दिन वो बदलता रहता है। उस पर भी पूरी तरह से वो अडिग नहीं है। उस भाव को समझाने के लिए परमपिता शिव निराकार का दिव्य अवतरण होता है। और उस दिव्य अतवरण को ही हम महाशिवरात्रि पर्व के रूप में मनाते हैं।

> परमात्मा को इन पाँच तत्वों से परे वाली जो स्थिति है उसके आधार से जाना है। इस समय उसको इतना महत्व हम क्यों नहीं दे पा रहे हैं,क्योंकि हमको उस निराकार को समझने के लिए पाँच तत्वों की देह से अपने आपको परे ले जाना होगा।

परमात्मा आकर हम सबको इस अंधेरे से का मतलब ये अज्ञानता की बात है,जिससे हम ये सारी बातें नहीं समझ पा रहे हैं। उससे हमें निकालकर फिर से प्रकाश की ओर ले जा रहे हैं। और वो जो प्रकाश की ओर ले जाने का सिलसिला है वो लम्बा है। क्योंकि जो इतने समय से देह के रूप में देख रहा है वो एकाएक निराकार के रूप में तो नहीं देख पायेगा ना! निराकार के रूप में देखने के लिए उसको थोड़ा टाइम लगेगा। तो इसीलिए शिवलिंग में ज्योतिबिन्दु, एक छोटी-सी आँख और तीन धारियां बनी होती हैं जो परमात्मा के ज्योतिबिन्दु होने का यादगार है। और जितने भी बड़े-बड़े तीर्थ स्थान हैं वहाँ भी ज्योति स्वरूप परमात्मा को दिखाया गया। वहाँ कोई मूर्ति नहीं है। सारे नाम में या तो गुण हैं या कर्त्तव्य हैं, तो इस तरह से परमात्मा को हम परख सकते हैं। इस महाशिवरात्रि पर, क्योंकि ये लेख तो एक छोटा-सा माध्यम होता है जिसमें हम एक छोटा-सा क्लू(संकेत) देते हैं कि आप किसी चीज़ को जानें कैसे? लेकिन उसको ठीक से जानने के लिए नज़दीकी जो सेवाकेन्द्र हैं ब्रह्माकुमारीज़ के, वहाँ पर जाकर सत्य परिचय परमात्मा का ज़रूर लेना चाहिए, क्योंकि ये समय अभी वही चल रहा है।

जब तक हम असलियत के साथ रूबरू नहीं होंगे तब तक हम पूरी तरह से भगवान से प्राप्तियां नहीं कर पायेंगे, शक्तियां नहीं ले पायेंगे, अपने आपको अच्छा नहीं बना पायेंगे। ये एक तरह से अनुग्रह है, विनती है कि आप सभी इस बात को समझकर, सुनकर, पढ़ कर चाहे जैसे भी एक बार सेवाकेन्द्र पर ज़रूर जायें और वहाँ जाकर इस कोर्स को समझें। परमात्मा को समझें, आत्माओं को समझें और अपने भाग्य को समझें ताकि महाशिवरात्रि पर्व को उसकी तरह से मना सकें जैसा वो चाहता है।

उपलब्ध पुस्तकें
जो आपके जीवन को बदल दे

प्रश्न : आप कहते हैं कि आपके पास भगवान आते हैं। यों तो सभी अपने गुरुओं को भगवान कहते हैं, हम कैसे मानें कि आपके यहाँ भगवान आते हैं?

उत्तर : आपका प्रश्न करना उचित है। अनेक भगवान देखकर सच्चे भगवान के बारे में भ्रम होना स्वाभाविक है। पहले तो हमें ये जान लेना चाहिए कि भगवान है कौन? तभी हम निर्णय कर सकेंगे कि भगवान कहाँ आते हैं। भगवान निराकार है, वे देह रहित, जन्म-मरण से न्यारे, ब्रह्मा विष्णु रुप है, ज्ञान के सागर, प्रेम के सागर, सर्वशक्तिवान हैं, वे सर्व गुणों के सिन्धु हैं। अतः किसी भी देहधारी को भगवान नहीं कहा जा सकता। हम ब्रह्मा बाबा को भगवान नहीं कहते, बल्कि उनके तन में भगवान प्रवेश करते थे। जो गुरु स्वयं को भगवान कहते हैं, उनसे पूछिये, क्या वे ब्रह्मा-विष्णु-शंकर के रचयिता हैं, क्या वे निराकार हैं, क्या वे ज्ञान के सागर हैं, क्या वे सम्पूर्ण हैं? स्पष्ट है कि नहीं हैं। भगवान आकर ज्ञान देते हैं, वे राजयोग सिखाकर मनुष्यात्माओं को सम्पूर्ण बनाते हैं, वे सतयुगी नई सृष्टि की स्थापना करते हैं, वे शिष्य नहीं अपने बच्चे बनाते हैं। वे सबकी प्यार से पालना करते हैं, वे शास्त्र नहीं पढ़ते, मुख्य बात वे सभी को पवित्र व सात्विक बनाते हैं। जहाँ ये लक्षण दिखाई दें, समझ लो वहीं भगवान अपना कर्त्तव्य कर रहे हैं।

प्रश्न : आप कहते हैं भगवान भारत में ही आते हैं- ऐसा क्यों? फिर तो भगवान भी पक्षपाती माने जाएंगे। भारत में ऐसा क्या है जो यहीं वे आते हैं?

उत्तर : भारत महान देश है, ये देवभूमि है, यही स्थान दो युग तक स्वर्ग था। यहीं पर पवित्रता की मान्यता है। यही धर्मभूमि व अध्यात्म की भूमि है। विदेशों में कहीं भी यदि किसी को शान्ति की प्यास उठती है, जो भी अध्यात्म की खोज करना चाहते हैं या जो भी योग सीखना चाहते हैं, तो वे भारत में ही आते हैं। भारत ही दो युग तक स्वर्ग था। भारत पवित्र भूमि है, इसलिए भारत को पुनः स्वर्ग बनाने के लिए उन्हें यहीं आना पड़ेगा। पाश्चात्य देशों में तो अति तामसिकता, अति अपवित्रता व अति भौतिकवाद है। आज तो वहाँ ये स्थिति है कि वे भगवान का नाम लेना भी पसंद नहीं करते, तब भला वहाँ भगवान कैसे आयेगा! भारत में ही सबसे ज़्यादा भक्ति, पूजा पाठ देखने को मिलता है। इसलिए भारत ही भगवान की जन्मभूमि व कर्मभूमि है। भारत ही ऐसा देश है जहाँ सर्व धर्मों का सम्मान होता है, इसलिए सर्व का कल्याण करने हेतु भगवान यहीं आते हैं।

प्रश्न : क्या भगवान से मिलना संभव है? सुना है प्रभु-मिलन के लिए तो हज़ारों वर्ष कठिन तपस्या करनी पड़ती है। आज तक वह किसी को मिला ही नहीं। आप तो कहते हैं, वे हमसे मिलने आते हैं।

उत्तर : यह सत्य है कि 2500 वर्ष से हमने भक्ति व तप किये, परन्तु हम प्रभु से न मिल पाये और न उनको जान पाये इसलिए उन्हें ही हमसे मिलने आना पड़ा। पहले वे आकर हमें अपनी सत्य पहचान देते हैं। जब हम भगवान को जानते ही नहीं तो भला हम उन्हें ढूंढेंगे कहाँ... सोचो हमारे मन में प्रभु मिलन की इच्छा होती है, इससे ही सिद्ध है कि हमें वे मिलते अवश्य हैं। परंतु हम उनसे मिलने नहीं जा सकते, वे

ही हमसे मिलने आते हैं। उनके आने का एक समय भी निश्चित होता है। जब कल्प का अन्त होता है और कलियुग समाप्ति की ओर जाता है, तब वे स्वयं आते हैं- केवल हमसे मिलने के लिए नहीं, बल्कि हमें मनुष्य से देवता बनाने के लिए और कलियुगी दुनिया को सतयुग में बदलने के लिए। इस समय प्रभु मिलन हो रहा है, वह अपना पुनीत प्यार दे रहा है, वह शक्तियां दे रहा है, वह राजयोग सिखा रहा है, परन्तु इसके लिए स्वयं को पवित्र बनाना होगा।

प्रश्न : हमने सुना है ब्रह्माकुमार-कुमारियां कहते हैं कि हमें भगवान पढ़ाते हैं। हमने प्रभु मिलन का सुख लिया है। वे अब भी हमसे मिलने आते हैं, परन्तु विश्वास नहीं होता। कहीं आप भ्रमित तो नहीं हो गये हो। भला भगवान से मिलना इतना सस्ता है क्या?

उत्तर : लाखों बुद्धिमान लोग इसके साक्षी हैं कि हमें भगवान ही पढ़ाते हैं। भगवान ही ज्ञान के सागर हैं, वे शास्त्रों का ज्ञान नहीं देते, बल्कि शास्त्रों का सार समझाते हैं। उनका ज्ञान लेकर कुछ भी जानना शेष नहीं रह जाता, सभी प्रश्नों का उत्तर मिल जाता है व सत्य की खोज समाप्त हो जाती है।

वे हज़ारों की सभा में आते हैं। उनके अवतरित होते ही सबको परमात्म मिलन का सुख अनुभव होने लगता है। सभी प्रभु-प्रेम में मग्न हो जाते हैं, सभी को वरदान प्राप्त होते हैं व सभी के चित्त शान्त हो जाते हैं। प्रत्यक्ष अनुभूतियों से सिद्ध हो जाता है कि सामने कोई महान आत्मा नहीं बल्कि स्वयं परमात्मा ही मनुष्य तन में अवतरित हैं। आप बुद्धिमान हैं। आपने परमात्मा के आने की बात सुनी। यह सुनकर क्या आपके मन में ये विचार नहीं उठा कि देखें तो सही। ये सब क्या है, कैसे आते हैं भगवान। परन्तु इसके लिए भी एक वर्ष तक पवित्र रहकर ईश्वरीय ज्ञान लेना होगा।

प्रश्न : वर्तमान समय चारों ओर भय, पापाचार, भ्रष्टाचार व आसुरीयता का बोलबाला है। क्या यही उचित समय है परमात्मा के अवतरण का?

उत्तर : सत्य कहा आपने धर्म का एक चरण अब समाप्त होता दिख रहा है। यद्यपि चारों ओर असंख्य मंदिर हैं, हर मंदिर में भीड़ भी ज़्यादा ही है। युवकों में भी धर्म की दौड़ दिखाई देती है। परन्तु धर्म मनुष्य के जीवन में नहीं है। स्वार्थ, लोभ, पाप और भ्रष्टाचार ने मनुष्य की बुद्धि को भी भारी कर दिया है। मनुष्य अपने हर अंग से पाप कर रहा है। सचमुच हम महाभारत काल में प्रवेश कर चुके हैं। मिसाइल्स वही अग्निबाण हैं, एटम बम वही ब्रह्मास्त्र हैं। दुर्योधन व दुःशासन की तो कहीं कमी नहीं है। अनेक द्रोपदियों के चीर हरण हो रहे हैं। धर्मगुरु मौन हैं। पापी सिंहासन पर बैठे हैं, पुण्यात्माएं भूखी हैं। अधर्म का ही चहुं ओर बोलबाला है। यह सम्पूर्ण सत्य है कि यही समय कलियुग का अंत है और शिव भगवान अवतरित होकर अपना दिव्य कार्य कर रहे हैं।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

मन की खुशी और सच्ची शांति के लिए देखें आपका अपना 'पीस ऑफ माइंड' और 'अवेकनिंग' चैनल